हिंदी section

चौंदास घाटी के सीमावर्ती क्षेत्रों में उच्च हिमालयी बहुमूल्य औषधीय पौंधों के कृषिकरण द्वारा आजीविका वृद्धि हेतु एक पहल

अमित बहुखण्डी, कुलदीप जोशी, नरेन्द्र परिहार, आई. डी. भट्ट
गोविन्द बल्लभ पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान, अल्मोड़ा

भारतीय हिमालयी क्षेत्र प्राचीन काल से ही जैव विविधता का मुख्य भण्डार रहा है एवं यह क्षेत्र पौंधों की लगभग 18,440 प्रजातियों (एंजियोस्पर्मः 8000 प्रजाति; जिम्नोस्पर्मः 44 प्रजाति; टेरिडोफाइट 600 प्रजाति; ब्रायोफाइट्स 1736 प्रजाति; लाइकेन 1159 प्रजाति और फंजाई 6900 प्रजाति) का प्रतिनिधित्व करता है। जिनमें लगभग 45% प्रजातियों में औषधीय गुण पाये जाते है, साथ ही उनमें से लगभग 1748 प्रजातियाँ औषधीय रूप से महत्वपूर्ण हैं। जिनका उपयोग आधुनिक एवं पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली में कई व्याधियों/रोगों (उदाहरणार्थ पेट दर्द, ज्वर, सर्दी, रक्तस्राव, घाव, संक्रमण, जलन, पीलिया, इन्फ्लूएंजा, दस्त, कैंसर, मधुमेह, हृदय रोग आदि) के रोकथाम के लिए किया जाता है। वर्तमान समय में विभिन्न औषधीय पादपों के वृहद उपयोग, मानव जनित दबाव, वनाग्नि, प्राकृतिक आपदाओं आदि के प्रभाव से पादप प्रजातियों पर संकट उत्पन्न होने लगा है। साथ ही कई बहुमूल्य औषधीय प्रजातियां विलुप्ति की ओर अग्रसर है। अतः इस बहुमूल्य धरोहर के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु सफल प्रयत्न आवश्यक है। उपरोक्त पहलूओं को ध्यान में रखते हुए गोविन्द बल्लभ पन्त राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान, अल्मोड़ा द्वारा पिथौरागढ की दूरस्थ सीमावर्ती चौंदास घाटी में बहुमूल्य औषधीय पादपों के संरक्षण, संवर्धन एवं कृषिकरण हेतु राष्ट्रीय हिमालयी अध्ययन मिशन पोषित परियोजना क्रियान्वित है। जिसके तहत चौंदास घाटी के चिन्हित गॉवों सोसा, नियांग, पंलकारी, पस्ती, जयकोट, पांगला, गस्कू, छलमा–छिलासौं, हिमखोला आदि के लगभग 150 प्रगतिशील कृषक वर्ष 2018–2020 से विविध औषधीय प्रजातियों जैसे वन हल्दी (*Hedychium spicatum*), कुटकी (*Picrorrhiza kurrooa*), कूट (*Saussurea costus*), जम्बू (*Allium stracheyi*), चोरू (*Angelica glauca*), तेजपात (*Cinnamomum tamala*), सम्यों (*Valeriana jatamansi*) आदि का वृहद कृषिकरण लगभग 200 नाली भूमि में कर रहे हैं।

यह चौंदास घाटी भारतीय क्षेत्र में पवित्र कैलास मानसरोवर यात्रा के प्राचीन मार्ग के रूप में भी विश्व विख्यात है। इस घाटी के केंद्र में समुद्र तल से लगभग 2700 मीटर की ऊंचाई पर विविध पादप प्रजातियों देवदार (*Cedrus deodara*), बांज (*Quercus semecarpifolia*), थुनेर (*Taxus baccata*), बुरांश (*Rhododenon arboreum*), काफल (*Myrica esculenta*) आदि से घिरा हुआ एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थान श्री नारायण आश्रम स्थापित है, जिसकी स्थापना श्री नारायण स्वामी द्वारा वर्ष 1936 में की गयी थी। वर्तमान में यह आश्रम श्री नारायण आश्रम ट्रस्ट द्वारा नियंत्रित है एवं संस्थान द्वारा इस केंद्रीय स्थान का चयन परियोजना के तहत संकटग्रस्त औषधीय पौधों के वृहद उत्पादन हेतु मातृ नर्सरी निर्माण (मास्टर प्रदर्शन स्थल और पॉलीहाउस) एवं विविध संवेदीकरण एवं क्षमता निर्माण कार्यशालाओं के आयोजन हेतु किया गया। जिसके तहत संस्थान द्वारा श्री नारायण आश्रम में समय – समय पर स्थानीय कृषकों को उच्च गुणवत्ता वाले बीज, पौंध आदि का वितरण, कृषिकरण विधि एवं तकनीकी ज्ञान प्रदान किया जाता है। इसके अलावा संस्थान क्षेत्र में जागरूकता अभियान, औषधीय पादपों के संरक्षण एवं संर्वधन हेतु तकनीकी कार्यशालाओं का आयोजन करता रहा है। साथ ही संस्थान ने प्रगतिशील कृषकों द्वारा उत्पादित पादपों के विक्रय हेतु उत्तराखण्ड राज्य के सरकारी, गैरसरकारी संगठनों जैसे कि हयूमन इंडिया श्रीनगर (Human India, Srinagar), सुरकुण्डा जड़ी बूटी समूह बागेश्वर (Surkunda Jadi Buti Samooh, Bageshwer), भेषजक संघ इकाई पिथौरागढ (Pharmacist Union, Pithoragarh) आदि से समझौता प्रपत्र भी तैयार किया है। जिसके तहत उक्त संस्थाऐं सीधे तौर पर स्थानीय कृषकों द्वारा उत्पादित औषधीय सामाग्री को उचित दर पर क्रय करेंगी।

इसके अलावा संस्थान द्वारा स्थानीय समुदाय की आर्थिक स्थिति मजबूत करने एवं वन भण्डारण को संरक्षित करने हेतु श्री नारायण आश्रम एवं चौंदास घाटी के विभिन्न गॉवों में वन हल्दी (कपूर–कचरी) से चिप्स निर्माण हेतु प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन दिसंबर माह में किया, जिसमें लगभग 80 स्थानीय कृषकों ने भागीदारी सुनिश्चित करते हुए प्रतिभाग किया। इस कार्यशाला में चिप्स–कटर मशीन एवं मैन्यूअल विधि द्वारा वनहल्दी के चिप्स निर्माण की बारीकियों पर श्री भूपाल सिंह गड़िया, प्रतिनिधि सुरकुण्डा जड़ी बूटी समूह बागेश्वर द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही उन्होने बताया कि वर्तमान में वन

हल्दी का मूल्य लगभग 25 रू / किग्रा है जो उक्त (वैल्यू एडीसन) चिप्स निर्माण द्वारा लगभग दो से तीन गुना (60–70 रू / किग्रा) तक बढ जाता है। जिसके परिणाम स्वरूप वन हल्दी के उत्पादन से जुडे स्थानीय कृषकों को आर्थिक लाभ होगा एवं अन्य स्थानीय निवासियों का उपरोक्त पादपों के कृषिकरण हेतु रूझान बढेगा जो कि भविष्य में प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण एवं संवर्धन में सहायक होगा। उक्त परियोजन के तहत संस्थान द्वारा स्थानीय कृषको को लगभग 6–8 कुंतल वन हल्दी का बीज एवं 3 लाख कुटकी के पौंधे वृहद रोपण हेतु आवंटित कर चौंदास क्षेत्र से लगभग 5–10 टन वन हल्दी के उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है, जो कि भविष्य में चौंदास क्षेत्र के स्थानीय समुदाय की आर्थिकी को मजबूत करेगा एवं कोविड– 19 महामारी से प्रभावित कठिनाईयों को कम करने में सहायक होगा।

चौंदास घाटी के नियांग गाँव में वन हल्दी (कपूर–कचरी) का वृहद कृषिकरण

श्री नारायण आश्रम में स्थापित पॉलीहाउस में बहुमूल्य औषधीय पादपों का संरक्षण एवं संवर्धन

श्री भूपाल सिंह गडिया प्रतिनिधि सुरकुण्डा जडी बूटी समूह बागेश्वर स्थानीय कृषक को मैन्यूअल विधि द्वारा वन हल्दी से चिप्स निर्माण की बारीकियों पर प्रशिक्षण देते हुऐ